।। अश्वेङ्गितोध्यायः ।।

अश्व शरीर में अग्नि उत्पात :

उत्सर्गान्न शुभदमासनात् परस्थं वामे च ज्वलनमतोऽपरं प्रशस्तम्।
सर्वाङ्गज्वलनमवृद्धिदं हयानां द्वे वर्षे दहनकणाश्च धूपनं वा।। 1।।

जीन कसने के स्थान से पीछे की ओर, घोड़े के शरीर में दाह हो, अर्थात् तपन या चिंगारी देखें (खरहरा करते समय बालों की रगड़ से) तो शुभ नहीं है। आसन (जीन) से बांयीं ओर अर्थात् सवार के बांयीं ओर ऐसा हो तो भी शुभ नहीं है। आसन से दांयीं ओर ऐसा हो तो शुभ है। सर्वांग में ही बहुतायत से ऐसा दिखे तो वृद्धिकारक नहीं होता है।

अन्तःपुरं नाशमुपैति मेढ्रे कोशः क्षयं यात्युदरे प्रदीप्ते।
पायौ च पुच्छे च पराजयः स्याद् वक्त्रोत्तमाङ्गज्वलने जयश्च।। 2।।

अश्व के लिंग स्थान में अग्निकण दिखें तो अन्तःपुर की हानि। पेट पर ऐसा उत्पात हो तो कोष हानि। पूँछ, पूँछ के नीचे ऐसा हो तो पराजय तथा मुँह व सिर पर ऐसा हो तो विजय होती है।

स्कन्धासनांसज्वलनं जयाय बन्धाय पादज्वलनं प्रदिष्टम्।
ललाटवक्षोऽक्षिभुजे च धूमः पराभवाय ज्वलनं जयाय।। 3।।

कन्धे, गर्दन व जीन के स्थान पर अग्निकण दिखना जयसूचक है। पैरों में ऐसा होना बन्धन का सूचक तथा ललाट, छाती, नेत्र व भुजा में ऐसा हो तो विजय सूचक है। इसके विपरीत ललाट, छाती, नेत्र व भुजा में भाप या धुआं सा उड़ता दिखे तो पराजय को सूचित करता है।

Scanned with CamScanner

नासापुटप्रोथशिरोऽश्रुपातनेत्रे च रात्रौ ज्वलनं जयाय।
पलाशताम्रासितकर्बुराणां नित्यं शुकाभस्य सितस्य चेष्टम्।। 4।।

नाक के छेद, नाक का मध्यभाग, सिर, आँसू का स्थान, नेत्र इन स्थानों पर अग्निकण दिखना रात्रि में विजयसूचक होता है।

लेकिन ढाक की रंगत वाले, ताम्रवर्ण, काले, सलेटी या चितकबरे, या तोतई रंग के घोड़े के उक्त अंगों में ज्वलन दिन रात सदा विजय की ही सूचना देती है।

अन्य चेष्टाएँ :

प्रद्वेषो यवसाम्भसां प्रपतनं स्वेदो निमित्ताद्विना
कम्पो वा वदनाच्च रक्तपतनं धूमस्य वा सम्भवः।
अस्वप्नश्च विरोधिनां निशि दिवा निद्रालसध्यानता
सादोऽधोमुखता विचेष्टितमिदं नेष्टं स्मृतं वाजिनाम्।। 5।।

घास पानी से विरक्तता, घोड़े का गिर जाना, पसीना आना, कम्पन, मुँह या कान से खून आना, रात में जागना व दिन में अलसाया रहना, अपनी छाती की ओर मुँह रखना ये सब चेष्टाएँ घोड़े के सन्दर्भ में अशुभ होती हैं।

आरोहणमन्यवाजिनां पर्याणादियुतस्य वाजिनः।
उपवाह्यतुरङ्गमस्य वा कल्पस्यैव विपन्नशोभना।। 6।।

जीन कसे घोड़े पर यदि दूसरा घोड़ा चढ़ जाए अर्थात् यथासम्भव सवार होने का प्रयत्न करे या मैथुन मुद्रा दिखाए तो शुभ नहीं होता है। जिस घोड़े को जाने के लिए तैयार किया गया है, उस पर जीन कसी हो या न कसी हो और जो घोड़ा स्वस्थ हो, अकारण ही कोई अस्वाभाविक चेष्टा करे अथवा आसन युक्त घोड़ी ही किसी दूसरे घोड़े पर चढ़ जाए तो शुभ नहीं होता है।

हिनहिनाने से शुभाशुभ :

क्रौञ्चवद्रिपुवधाय हेषितं ग्रीवया त्वचलया च सोन्मुखम्।
स्निग्धमुच्चमनुनादि हृष्टवद् ग्रासरुद्धवदनैश्च वाजिभिः।। 7।।

क्रौंच पक्षी के समान आवाज करे। अथवा गर्दन निश्चल रख कर, मुँह ऊपर की ओर करके आवाज करे। मधुर स्वर में हिनहिनाए। अथवा अनुनाद करे अर्थात्

Scanned with CamScanner

आवाज बाद तक गूंजती सी रहे। प्रसन्नतापूर्वक मुँह में घास लेकर आवाज करे तो शीघ्र ही रिपुनाश की सूचना देता है।

पूर्णपात्रदधिविप्रदेवतागन्धपुष्पफलकाञ्चनादि वा।
द्रव्यमिष्टमथवा परं भवेद् ह्रेषतां यदि समीपतो जयः।। 8।।

किसी शुभ पदार्थ (अन्नादि) से भरे पात्र के पास, दही के पास, ब्राह्मण, देवता, गन्धपदार्थ, अगर, कपूर आदि, फूल, फल, सुवर्ण, अन्य कीमती धातु, मणि, मुक्तादि के पास, घोड़ा मधुर हिनहिनाए तो जय की सूचना समझिए।

भक्ष्यपानखलिनाभिनन्दिनः पत्युरौपयिकनन्दिनोऽथवा।
सव्यपार्श्वगतदृष्टयोऽथवा वाञ्छितार्थफलदास्तुरङ्गमाः।। 9।।

खाद्य पदार्थ, पानी, लगाम को देखकर, अथवा अपने स्वामी की कोई वस्तु देखकर जो घोड़े प्रसन्न होकर हिनहिनाते हैं या सामान्यतः अपनी दांयीं ओर नजर करके, दांयीं कनखियों से देखने की आदत रखते हैं, ऐसे घोड़े बहुत उत्तम व मनोरथों को पूर्ण करने वाले भाग्यवान् होते हैं।

अशुभ चेष्टाएँ :

वामैश्च पादैरभिताडयन्तो महीं प्रवासाय भवन्ति भर्तुः।
सन्ध्यासु दीप्तामवलोकयन्तो ह्रेषन्ति चेद् बन्धपराजयाय।। 10।।

यदि घोड़ा अपने बांएँ पैर से, जमीन को ठोके या खोदे तो स्वामी की यात्रा की सूचना देता है।

यदि घोड़ा प्रातः मध्यान्ह, सायं आधी रात में दीप्ता दिशा की ओर देखकर आवाज करे तो बन्धन या पराजय का कारक होता है।

अतीव ह्रेषन्ति किरन्ति वालान् निद्रारताश्च प्रवदन्ति यात्राम्।
रोमत्यजो दीनखरस्वराश्च पांशून् ग्रसन्तश्च भयाय दृष्टाः।। 11।।

जो घोड़े अधिक हिनहिनाते हैं और पूँछ के बाल गिराते हैं या ऊनींदे से रहते हैं, तब उस काल में यात्रा की सूचना देते हैं। रोएँ गिराने वाले, पतली, दुर्बल हिनहिनाहट वाले या रूखे खरखरे स्वर वाले, मिट्टी चाटने वाले घोड़े, मालिक के लिए भय की सूचना देते हैं।

समुद्गवद्दक्षिणपार्श्वशायिनः पदं समुत्क्षिप्य च दक्षिणं स्थिताः।
जयाय शेषेष्वपि वाहनेष्विदं फलं यथासम्भवमादिशेद् बुधः।। 12।।

Scanned with CamScanner

दांयाँ घुटना मोड़कर खड़े होने वाले या इसी मुद्रा में सोने वाले घोड़े मालिक के लिए विजयप्रद होते हैं।

शेष घोड़ा आदि वाहनों में भी यथासम्भव इन लक्षणों से शुभाशुभ विचार किया जा सकता है।

अन्य शुभ लक्षण :

आरोहति क्षितिपतौ विनयोपपन्नो
यात्रानुगोऽन्यतुरगं प्रतिहेषते च।
वक्त्रेण वा स्पृशति दक्षिणमात्मपार्श्वं
योऽश्वः स भर्तुरचिरात् प्रचिनोति लक्ष्मीम्।। 13।।

पीठ पर बैठते ही जो घोड़ा विनम्र हो जाए तथा जिस दिशा में यात्रा करनी हो, उसी ओर मुँह करके खड़ा हो जाए। दूसरे घोड़े के हिनहिनाने पर स्वयं भी हिनहिनाने लगे अथवा अपने दाँएं भाग को मुँह से छूने की आदत हो तो ऐसा घोड़ा अपने स्वामी की लक्ष्मी को शीघ्र ही बढ़ाता है।

अशुभ निमित्त :

मुहुर्मुहुर्मूत्रकृत् करोति न ताड्यप्यनुलोमयायी।
अकार्यभीतोऽश्रुविलोचनश्च शिवं न भर्तुस्तुरगोऽभिधत्ते।। 14।।

जो घोड़ा बार-बार मल मूत्र त्यागे। डाँटने फटकारने व हाँकने पर भी अभीष्ट दिशा की ओर मुँह न करे। बिना कारण ही डरा रहे। आँखों में आंसू से भरे रहें तो वह अपने मालिक के लिए बहुत अमंगलकारक होता है।

उक्तमिदं हयचेष्टितमत ऊर्ध्वं दन्तिनां प्रवक्ष्यामि।
तेषां तु दन्तकल्पनभङ्गम्लानादिचेष्टाभिः।। 15।।

इस प्रकार घोड़ों की चेष्टाओं के विषय में यहाँ कहा जा चुका है। अब आगे हाथी की चेष्टाएं कहूँगा। हाथियों का फल उनके दांतों से, दाँत की रंगत से, दन्तविहीन होने से विचारित होता है।

इति श्रीमहामतिवराहमिहिराचार्यकृतायां बृहत्संहितायां पं. सुरेशमिश्रकृतेऽभिनव हिन्दीभाष्येऽश्वेङ्गिताध्यायो द्विनवतितमः।। 92।।

Scanned with CamScanner